"Social and political views of Rajaram Mohan Roy":-

→ Political views of Rajaram Mohan Roy -

Rajaram Mohan Roy cannot be called a politicalian but he was interested in politics of the country and aboredoad and he also had a good knowledge of European politics He had good knowledge only then his contributi on to Indian political awakening was immense. He awakened political consciousness in India. Surendranath Banerjee considers him to be the "father of the constitutional movement in India". Rajaram Mohan Shy took note of various positions in Indian politics and removed the short comings of the app problems with great intelligence and understan ding. His political career was great.

Raja Rammohan Roy's personal and political freedom: →

Related Ideas → Raja Rammohan Roy accepted the principle of natural rights. He was of the opinion that it is the natural rights of individuals to have the freedom and property of life which they should get, but they also supported the moral rights with the natural officers.

Scanned with Cam

→ Although he was a supporter of freedom and officers; yet he believed that laws should be definitely restricted to the person in terms of educational development and social improvement. Ram mohan Roy was an advocate of personal freedom but still did not want to reduce the scope of the state. ~~is not a~~ He was ~~to~~ of the view that the state is not a hindrance to the freedom of individuals, but ~~the~~ he consider the state to be the protector of the weak and helpless persons. He believed that the task of the state is to try to improve the social, cultural, moral and political condition of the people.

→ They consider the dignity of the person valuable That is why he used to give the highest place to things like liberty rights, opportunity and justice. The French state revolution had a profound impact on him. He considered individualism and the state as complementry to one another.

→ Like other priests of freedom, like Mateskvayu Russo, etc., they also loved the ideal of freedom. But along with personal freedom, they were biased towards national independence. They used to say "Freedom is valuable for humans, but it is also important for the nation."

Scanned with Cam

→ Since he was a devotee of national freedom freedom. So the world supported the voice for freedom from any part. He was some kind of autocratic anywhere. He was opposed to Sata and raised voice for freedom. He welcomed and supported. His love for freedom was great.

Scanned with Cam

→ Freedom of speech and press :-

Raja Ram mohan Roy was a strong supporter of freedom of press and ideas. They knew that for human progress, it is necessary for individuals to have knowledge and this knowledge can be acquired from journals and magazines. Therefore, he used the press to communicate brotherhood and unity among humans. He also got a paper called Samvad Kaumudi and a Mirat ul Akhbar published in Bengali and English and in Persian language respectively. In 1823, he sought freedom of the press by presenting a petition in the High court. At that time only the licensees showing the government's husband loyalty were allowed to take out the letter, after their appeal was unsuccessful, they appealed in king-in-Council too.

→ Judicial System

→ Ram mohan Roy believed that judicial institutions, organization and judicial process should be public welfare. Ram mohan Roy believed that only India will be able to touch the heights of freedom and equality. He opposed the

Scanned with Cam

1827 Act of the British ~~Go~~ government. In which along with the prevalence of jury practice in India, it was also decided that the idea of christian only. will do. on the basis of Hindu or Muslim lawsuits will only be considered by Christians will also get a chance to participate, they opposed this practise of all Hindus and After much efforts in the forms of an application with the signature of Muslims, the ~~jurgy~~ jury bill of 1833 charles Gurant was passed, according to which the improper jury system was reduced to Rs58.

→ Raja ram mohan Roy wanted that only those people should become judicial officers who are fair and fair and can be honest with everyone and the government ~~jobs, according to their education~~ with impartiality.

→ In government jobs, according to their education and qualifications, they should be appointed to good positions and they will also have to give state honors according to their needs and qualification. ~~they~~ If the British government, then

Scanned with Can

they have to do it.

→ Advice regarding Europeans — In 1832, the select committee of Uniya lok sabha sought advice from Rajaram Mohan Roy, and he advised that the European people. If you we do business related to agriculture by staying permanently in India, then India will benefit if we do business with from trade scientific system, then there will be all-round progress. They will be a decrease in the prices, people will be able to get everyday essential easily.

→ Appraiser — Thus Rajaram Mohan Roy was a great humanist worship -er of world fraternity and a thinker of universal religion.

Scanned with Cam

"TOPIC = 5.4.20

"राजाराम मोहन राय के सामाजिक व राजनीतिक विचार"-

→ **राजाराम मोहनराय के राजनीतिक विचार** - राजाराम मोहन राय को एक राजनीतिज्ञ तो नहीं कहा जा सकता लेकिन उन्हें देश-विदेश की राजनीति में दिलचस्पी अवश्य थी और उसका उन्हें अच्छा ज्ञान भी था। यौरोपीय राजनीति का उन्हे अच्छा ज्ञान था तभी तो भारतीय राजनीतिक जागरण में उनका योगदान बहूमूल्य रहा। उन्होने भारत में राजनीतिक चेतना जाग्रत की।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तो उन्हे "भारत में संवैधानिक आँदोलन का जनक" मानते है।

राजा राममोहन राय ने भारतीय राजनीति के विभिन्न पक्षों पर ध्यान दिया और जो कमियाँ एंव समस्याएं थी उन्हे बड़ी बुद्धिमता से एंव समझदारी से दूर किया। उनका राजनीतिक चिंतन महान था।

→ **राजा राम मोहनराय के वैयक्तिक व राजनीतिक स्वतंत्रता संबंधी विचार** - राजाराममोहनराय ने प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत को स्वीकार किया। उनका मत था कि जीवन की स्वतंत्रता और संपत्ति धारण करना तो व्यक्तियो का प्राकृतिक अधिकार है जो उन्हें, मिलना ही चाहिए पर उन्होंने प्राकृतिक अधिकारों के साथ नैतिक अधिकारों का भी समर्थन किया।

→ हालांकि वे स्वतंत्रता एंव अधिकारों के समर्थक रहे फिर भी उन्होंने माना कि शैक्षिक विकास एंव समाज सुधार की दृष्टि से कानूनों का अंकुश व्यक्ति पर निश्चित रूप से होना चाहिए।

Scanned with Can

राममोहन राय वैयक्तिक स्वतंत्रता के पक्षपाती थे पर फिर भी वे राज्य के कार्यक्षेत्र को कम नहीं करना चाहते थे। उनका विचार था कि राज्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता में बाधक नहीं है वरन् वे राज्य को निर्बल व असहाय व्यक्तियों का रक्षक मानते थे। वे मानते थे कि राज्य का कार्य है कि जनता की सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक व राजनीतिक दशा सुधारने का प्रयत्न करे।

→ वे व्यक्ति की गरिमा को बहुमूल्य मानते थे। इसलिए तो स्वतंत्रता, अधिकार, अवसर एंव न्याय आदि बातों को वे सर्वोच्च स्थान देते थे। फ्रांस की राज्य क्रांति का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। वे व्यक्ति एंव राज्य को एक-दूसरे का पूरक मानते थे।

→ स्वतंत्रता के अन्य पुजारियों जैसे-मॉटेस्क्यू, रूसो आदि के समान ही वे भी स्वतंत्रता के आदर्श से प्रेम करते थे। पर वैयक्तिक स्वतंत्रता के साथ ही वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के पक्षपाती थे। वे कहा करते थे "स्वतंत्रता मानव के लिए बहुमूल्य है, पर वह राष्ट्र के लिए भी जरूरी है।"

→ चूंकि वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के भक्त थे। अतः विश्व के किसी भी भाग से आयी स्वतंत्रता की आवाज का समर्थन करते थे। वे कहीं भी किसी तरह की निरंकुश सत्ता के विरोधी थे तथा स्वतंत्रता के लिए उठी आवाज का वे स्वागत एंव समर्थन करते थे। स्वतंत्रता के प्रति उनका प्रेम महान था।

Scanned with Cam

⇒ भाषण एवं प्रेस की स्वतंत्रता :— राजा राम मोहन राय प्रेस तथा विचारों की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। वे जानते थे कि मानव उन्नति के लिए व्यक्तियों को ज्ञान होना जरूरी है तथा यह ज्ञान पत्र-पत्रिकाओं से अर्जित किया जा सकता है। इसलिए मनुष्यों में भाईचारे एवं एकता का संचार करने हेतु उन्होंने प्रेस का सहारा लिया। उन्होंने पत्र भी निकाले एवं संवाद कौमुदी और एक 'मिलात उल अखबार' नामक पत्र क्रमशः बांगला एवं अंग्रेजी में तथा फारसी भाषा में प्रकाशित करवाया।

1823 में उन्होंने हाईकोर्ट में पिटीशन प्रस्तुत करके प्रेस की स्वतंत्रता की मांग की थी। उस वक्त सरकार के प्रति निष्ठा दिखाने वाले लाइसेंसधारियों को ही पत्र निकालने की अनुमति होती थी, उनकी अपील असफल हो जाने के बाद उन्होंने 'किंग-इन-कौंसिल' में अपील की वह भी निष्फल रही।

⇒ न्यायिक व्यवस्था :— राममोहन राय 'मानते थे कि न्यायिक संस्थाएँ, संगठन तथा न्यायिक प्रक्रिया का जनकल्याणकारी होना आवश्यक है

राममोहन राय की मान्यता थी कि भारतीय कानून के विशेषज्ञों को ही जूरी का सदस्य बनाना चाहिए, तभी भारत स्वतंत्रता तथा समानता की ऊंचाइयों को छू सकने के लायक बनेगा। उन्होंने अंग्रेज सरकार के 1827 के अधिनियम का विरोध किया। जिसमें भारत में जूरी प्रथा के प्रचलन के साथ ही यह भी निश्चित किया गया कि ईसाइयों के मुकदमों का विचार केवल ईसाई ही करेंगे, पर हिन्दू या मुसलमानों के मुकदमों का विचार केवल ईसाई ही करेंगे, पर हिन्दू या मुसलमानों के मुकदमों पर जब विचार होगा तब ईसाईयों को भी भाग लेने का मौका मिलेगा इस प्रथा का विरोध उन्होंने देश के तमाम हिन्दू तथा

Scanned with Cam

मुसलमानों के हस्ताक्षर के साथ एक आवेदन के रूप में किया काफी कोशिशों के बाद 1833 में चार्ल्स ग्रांट का जूरी बिल पास हुआ जिसके अनुसार अनुचित जूरी व्यवस्था को रद्द किया गया।

→ राजा राममोहनराय चाहते थे कि सिर्फ वे ही व्यक्ति न्यायिक अधिकारी बनने चाहिए जो निष्पक्ष, स्पष्ट एवं विवेक संपन्न हों और निष्पक्षता के साथ सबके साथ एवं सरकार के हर अंग के प्रति ईमानदार रह सकें।

→ सरकारी नौकरी में भारतीयों को उनकी शिक्षा एवं योग्यता के अनुसार अच्छे पदों पर नियुक्त करें एवं उन्हें आवश्यकता एवं योग्यतानुसार राजकीय सम्मान भी देना होगा। अगर ब्रिटिश सरकार भारतीयों को सरकार के प्रति निष्ठावान चाहती है तो उन्हें यह करना ही होगा।

→ <u>योरोपियनों के संबंध में सलाह</u> :— 1832 में ब्रिटिश लोकसभा की प्रवर समिति ने राजाराम मोहन राय से सलाह माँगी तो उन्होंने सलाह दी कि योरोपीयन लोग पूँजी लगाकर भारत में स्थायी रूप से रहकर कृषि संबंधी व्यापार करें तो भारत को लाभ होगा व्यापार वैज्ञानिक प्रणाली से करेंगे तो सभी तरफ उन्नति होगी। मूल्यों में कमी आएगी लोग आसानी से रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुएं पा सकेंगे।

→ <u>मूल्यांकन</u> :— इस तरह राजाराम मोहनराय महान मानवतावादी विश्व बंधुत्व के उपासक तथा सार्वभौम धर्म के चिंतक थे।

Scanned with Cam